International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management
ISSN: **3108-1754 (Online)**
Volume 02 Issue 06 June-2026 | Impact Factor: 3.5

भारतीय संस्कृति, धर्म और लोकमंगल की अवधारणा : रामकाव्य के संदर्भ में

1. **प्रज्ञा दीक्षित**, शोधार्थी, भाषा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेल-prajna7500@gmail.com
2. **डॉ. सीमा शर्मा**, अध्यक्ष, भाषा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेल-sseema561@gmail.com

भारतीय संस्कृति अनेक धाराओं का महासंगम है- वेद, उपनिषद, पुराण, लोकगीत, नृत्य, चित्रकला और काव्य; सभी मिलकर एक ऐसी सांस्कृतिक चेतना का निर्माण करते हैं जो सहस्राब्दियों से प्रवाहित होती रही है। इस विशाल सांस्कृतिक परिदृश्य में रामकाव्य का स्थान केंद्रीय और अतुलनीय है। राम की कथा केवल एक धार्मिक आख्यान नहीं, वह भारतीय मनुष्य के आदर्श, नैतिकता, संघर्ष और समर्पण का जीवंत दस्तावेज है। आदिकवि वाल्मीकि ने जब रामायण की रचना की, तो उन्होंने केवल एक राजकुमार की कथा नहीं लिखी उन्होंने एक आदर्श मनुष्य की परिभाषा लिखी। गोस्वामी तुलसीदास ने जब रामचरितमानस की रचना की, तो उन्होंने उस परिभाषा को भारत के जन-जन तक पहुँचाया। निराला ने जब 'राम की शक्ति पूजा' लिखी, तो उन्होंने राम को आधुनिक मनुष्य के संघर्ष का प्रतीक बनाया। इस प्रकार रामकाव्य एक सतत प्रवाहमान परंपरा है जो हर युग में नया रूप लेती है और हर युग की पीड़ा, आस्था और आकांक्षा को व्यक्त करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय संस्कृति और रामकाव्य के अंतर्संबंध को उनकी ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक गहराई, साहित्यिक विविधता और समकालीन प्रासंगिकता के संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास करता है।

राम: एक सांस्कृतिक अवधारणा

राम को समझना भारतीय संस्कृति को समझना है। वे केवल एक पौराणिक पात्र नहीं वे भारतीय मनुष्य का आत्म-प्रतिबिंब हैं। महात्मा गांधी ने कहा था- "मेरे राम न तो ऐतिहासिक राम हैं, न पौराणिक। मेरे राम तो वह अजन्मी, अजर, अमर शक्ति है जो ब्रह्मांड की सृष्टि, स्थिति और संहार का कारण है। वह शक्ति ही मेरे लिए राम है।" - महात्मा गांधी, हरिजन, 1934
गांधी का यह कथन रामकाव्य की उस व्यापकता को व्यक्त करता है जो उसे केवल साहित्य नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन बनाती है। भारतीय संस्कृति में राम का चरित्र अनेक आयामों से परिभाषित होता है- वे मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, आदर्श पुत्र हैं, आदर्श पति हैं, आदर्श मित्र हैं और आदर्श राजा हैं। इन आयामों में से प्रत्येक भारतीय समाज के एक मूल्य को प्रतिबिंबित करता है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने रेखांकित किया है कि राम की लोकप्रियता का रहस्य उनके चरित्र की बहुआयामिता में है- "राम का चरित्र इसलिए अमर है क्योंकि वह केवल देवता नहीं, मनुष्य भी है। उनके सुख और दुख, उनकी पीड़ा और धैर्य, ये सब मनुष्य के अनुभव हैं। इसीलिए हर युग का मनुष्य राम में अपना प्रतिबिंब देखता है।" -डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य की भूमिका

© 2026 The Author(s). Published by IJCOPE Journal. Website: https://ijcope.org/

रामकाव्य की परंपरा : वाल्मीकि से निराला तक

रामकाव्य की परंपरा का मूल स्रोत महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण' है। यह संस्कृत साहित्य का आदिकाव्य है जिसमें 24,000 श्लोक हैं और जो सात कांडों में विभाजित है। वाल्मीकि ने राम को एक आदर्श मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया जो सत्य, धर्म और मर्यादा का पालन करता है, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विकट हों। रामायण का यह श्लोक जो राम के आदर्श को एक पंक्ति में समेटता है -

"रामो विग्रहवान् धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।

राजा सर्वस्य लोकस्य देवानाम् मघवान् यथा।।" - वाल्मीकि रामायण, अरण्यकांड, 37.13 अर्थात् राम मूर्तिमान धर्म हैं, सज्जन हैं, सत्य-पराक्रमी हैं और समस्त लोक के राजा हैं जैसे- देवताओं में इंद्र। यह श्लोक राम की सांस्कृतिक परिभाषा है। भारतीय संस्कृति में 'धर्म' की अवधारणा यहाँ राम के व्यक्तित्व में मूर्त होती है।

रामचरितमानस: जन-संस्कृति का महाकाव्य- गोस्वामी तुलसीदास (1532–1623 ई.) कृत रामचरितमानस हिंदी साहित्य का सर्वोच्च महाकाव्य है और भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक पठित ग्रंथ। अवधी भाषा में लिखी चौपाइयाँ और दोहे भारत के करोड़ों घरों में गूँजते हैं। तुलसीदास ने राम को भक्त का आराध्य बनाया करुणामय, सुलभ और मानवीय। रामचरितमानस का यह दोहा जो राम की सर्वव्यापकता को अभिव्यक्त करता है-

"सिया राम मय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।"- रामचरितमानस, बालकांड, दोहा 7 (मंगलाचरण) यह पंक्ति भारतीय दार्शनिक चेतना का सार है। जब तुलसीदास कहते हैं 'सिया राम मय सब जग जानी', तो वे कह रहे हैं कि इस सृष्टि का कण-कण राम और सीता से व्याप्त है। यह अद्वैत-दर्शन की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है। इसी दृष्टि से भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना पनपती है। रामचरितमानस में 'रामराज्य' की जो कल्पना है, वह भारतीय राजनीतिक आदर्श की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति है -

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि व्यापा।।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।" - रामचरितमानस, उत्तरकांड

'रामराज्य' में न दैहिक कष्ट, न दैविक आपदा, न भौतिक अभाव। सभी मनुष्य परस्पर प्रेम करते हैं और अपने धर्म का पालन करते हैं। यह भारतीय सांस्कृतिक स्मृति का सर्वोच्च आदर्श है जो आज भी राजनीतिक विमर्श में उद्धृत होता है। महात्मा गांधी ने स्वतंत्र भारत की कल्पना 'रामराज्य' के रूप में की थी।

भक्तिकालीन रामकाव्य: विविध स्वर- भक्तिकाल (14वीं से 17वीं शताब्दी) में रामकाव्य की अनेक धाराएँ एक साथ प्रवाहित हुईं। कबीर ने निर्गुण राम की उपासना की-

"राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट।

अंत काल पछताएगा, जब प्राण जाएँगे छूट।।" - कबीर, साखी

कबीर के राम न अयोध्या के राजकुमार हैं, न दशरथ के पुत्र। वे निर्गुण ब्रह्म हैं ,सर्वव्यापी, निराकार। 'राम नाम की लूट', यह पद भक्ति की उस उदारता को व्यक्त करता है जो किसी से नाम-स्मरण का अधिकार नहीं छीनती। यह भारतीय संस्कृति की समावेशिता का प्रतीक है। सगुण-निर्गुण के इस द्वंद्व में तुलसीदास ने दोनों का समन्वय किया-

"अगुनहि सगुनहि नहिं कछु भेदा।

गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा।।"- रामचरितमानस, बालकांड, दोहा 22

निर्गुण और सगुण में कोई भेद नहीं यह तुलसी का समन्वयवादी दृष्टिकोण है। भारतीय दर्शन की यही विशेषता है विविधता में एकता, भेद में अभेद। रामकाव्य इसी समन्वय का काव्यात्मक प्रकाशन है।

निराला का आधुनिक राम: मानवीय संघर्ष

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की 'राम की शक्ति पूजा' (1936) रामकाव्य परंपरा की एक अभिनव रचना है। इसमें राम को केवल दिव्य नायक के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील मानव के रूप में चित्रित किया गया है। निराला का राम युद्ध से पूर्व थका हुआ, चिंतित और संशयग्रस्त दिखाई देता है, किंतु शक्ति-साधना के माध्यम से वह आत्मबल प्राप्त करता है। यह काव्य आधुनिक मनुष्य के मानसिक संघर्ष, आत्मसंघर्ष और संकल्प की विजय का प्रतीक बन जाता है। इसी कारण यह रचना आधुनिक चेतना से गहराई से जुड़ी हुई मानी जाती है।

"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई लीन।।" - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, राम की शक्ति पूजा (1936)

'पुरुषोत्तम नवीन' पद निराला की आधुनिक दृष्टि का परिचायक है। उनके लिए राम केवल पौराणिक आदर्श पुरुष नहीं, बल्कि आधुनिक युग के संघर्षशील मनुष्य के प्रेरणास्रोत भी हैं। निराला ने राम के चरित्र को 20वीं शताब्दी की सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक पीड़ाओं से जोड़कर नई अर्थवत्ता प्रदान की। उनके राम अन्याय, निराशा और संघर्ष के बीच मानवता, साहस और नैतिकता के प्रतीक बनकर उभरते हैं। इस प्रकार निराला ने रामकाव्य को परंपरा से आगे बढ़ाकर आधुनिक चेतना और युगबोध से संपृक्त किया।

रामकाव्य और भारतीय संस्कृति के विविध आयाम- भारतीय समाज की नींव 'मर्यादा' की अवधारणा पर टिकी है। राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम' हैं वे अपने पिता के वचन की रक्षा के लिए राजसिंहासन त्याग देते हैं, वन जाते हैं। यह त्याग भारतीय सामाजिक मूल्यों का केंद्र है, पुत्र का पिता के प्रति कर्तव्य, प्रजा के प्रति राजा की जिम्मेदारी। रामायण में जब राम वन-गमन के लिए तैयार होते हैं, तो उनका यह भाव भारतीय पुत्र-धर्म का आदर्श बन जाता है-

"जौं न होत जग जनम भरत को।

सकल धरम धुर धरनि धरत को।।" - रामचरितमानस, अयोध्याकांड

भरत की धर्म-निष्ठा और राम की मर्यादा भारतीय संस्कृति के उच्चतम सामाजिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करती है। राम जहाँ मर्यादा, कर्तव्य और आदर्श शासन के प्रतीक हैं, वहीं भरत त्याग, समर्पण और धर्मपालन के अनुपम उदाहरण हैं। 'धर्म की धुरी धारण करने वाला' पद यह स्पष्ट करता है कि सच्चा मनुष्य वही है जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर

समाज, परिवार और राष्ट्र के धर्म को महत्व देता है। भरत ने राज्य का लोभ त्यागकर राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित किया, जिससे भारतीय संस्कृति में त्याग, मर्यादा और लोकमंगल की भावना सुदृढ़ होती है।

दार्शनिक आयाम: वसुधैव कुटुंबकम

रामकाव्य में भारतीय दर्शन की वह उदारता मिलती है जो 'वसुधैव कुटुंबकम', समस्त वसुधा एक परिवार है; के सिद्धांत में अभिव्यक्त होती है। राम का मित्र केवट है, गुह्यराज है, वानर सुग्रीव है, भालू जामवंत है, गिद्ध जटायु है,जाति, प्रजाति और सामाजिक स्थिति से परे। रामायण इस सार्वभौमिक मित्रता का काव्य है। शबरी प्रसंग इस उदार सांस्कृतिक दृष्टि का सर्वोच्च उदाहरण है-

"केवट राज प्रेम कैं बारे।

जनु जलु जाइ जलद संग तारे।।" - रामचरितमानस, अयोध्याकांड केवट, एक साधारण नाविक. राम का उतना ही प्रिय है जितना कोई भी अन्य। भारतीय संस्कृति की यही विशेषता है कि वह जन्म से नहीं, भाव से व्यक्ति को मापती है। रामकाव्य इस समतावादी दृष्टि का काव्यात्मक दस्तावेज है।

स्त्री-विमर्श: सीता का चरित्र

रामकाव्य में सीता का चरित्र भारतीय स्त्री-दृष्टि का सबसे जटिल और बहुआयामी चित्रण है। एक ओर वे शक्ति की प्रतीक हैं, पृथ्वी-पुत्री, शिव-धनुष को उठाने वाली, अग्नि-परीक्षा में अडिग। दूसरी ओर उनका परित्याग भारतीय समाज की उस पितृसत्तात्मक संरचना को उजागर करता है जिसे परवर्ती काल में अनेक स्त्री-विमर्शकारों ने प्रश्नांकित किया है **डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार-** सीता का चरित्र भारतीय नारी की शक्ति और पीड़ा दोनों का प्रतीक है। रामायण की यही जटिलता उसे केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सामाजिक विमर्श का आधार बनाती है।- डॉ. रामविलास शर्मा, भारत की भाषिक संस्कृति

लोक-संस्कृति और रामकाव्य

रामकाव्य का प्रभाव केवल शास्त्रीय साहित्य तक सीमित नहीं। भारत की लोक-संस्कृति लोकगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, मिथिला चित्रकला, पटचित्र, मिट्टी के खिलौने, कढ़ाई-बुनाई के आकृति-चित्र सभी में राम की कथा अनगिनत रूपों में प्रकट होती है। रामलीला, जो रामायण का नाट्य रूपांतरण है, भारत की सबसे प्राचीन और व्यापक नाट्य परंपरा है। यूनेस्को ने 2008 में 'रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन' को अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सूची में स्थान दिया।[1]

रामकाव्य की भाषाई विविधता और सांस्कृतिक एकता

भारत की विविध भाषाओं में रामकाव्य की रचना इस देश की सांस्कृतिक एकता का सबसे बड़ा प्रमाण है। तमिल में कम्बन रामायण (12वीं शताब्दी), तेलुगु में रंगनाथ रामायण (14वीं शताब्दी), बंगाली में कृत्तिवास रामायण (15वीं शताब्दी), असमिया में माधव कन्दलि रामायण (14वीं शताब्दी), ओड़िया में बलरामदास की जगमोहन रामायण (16वीं शताब्दी), मराठी में एकनाथ भागवत और अनेक अन्य भाषाओं में, ए.के. रामानुजन ने अपने प्रसिद्ध निबंध 'Three Hundred Ramayanas' में रेखांकित किया है कि भारत में तीन सौ से अधिक रामायण-परंपराएँ हैं- No one version can claim to be the authentic one, for each version is the authentic version for the community that uses it. Together they constitute a great conversation across centuries and cultures. -A.K. Ramanujan, Three Hundred Ramayanas

© 2026 The Author(s). Published by IJCOPE Journal. Website: https://ijcope.org/

(1991) यह 'महान संवाद' भारतीय सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। एक ही कथा का विविध भाषाओं और परंपराओं में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होना, यह भारत की 'अनेकता में एकता' का सर्वोत्तम उदाहरण है।

रामकाव्य और भारतीय कलाएँ

रामकाव्य की कथा भारतीय कलाओं के हर रूप में अभिव्यक्त हुई है। संगीत में, ध्रुपद की रामायणी परंपरा, भजन, कीर्तन, नृत्य में भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, मणिपुरी; सभी में राम-कथा के प्रसंग उपस्थित हैं। चित्रकला में, अजंता की गुफाओं से लेकर मिथिला चित्रकला तक राम के दृश्य, मूर्तिकला में, हम्पी के विट्ठल मंदिर में रामायण की दृश्य-शृंखला। रामकाव्य और संगीत के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि तुलसीदास स्वयं संगीतज्ञ थे। उन्होंने 'कवितावली' में छंद और लय का जो प्रयोग किया, वह संगीत और काव्य के अद्भुत समन्वय का उदाहरण है। रामचरितमानस की चौपाइयाँ गायन के लिए इतनी उपयुक्त हैं कि उन पर अनेक शास्त्रीय और लोक-संगीत की धुनें बनी हैं। भारतीय चित्रकला में रामकाव्य के दृश्य-चित्रण की परंपरा अत्यंत समृद्ध है। बसोहली, मेवाड़, जयपुर और मुगल शैलियों में रामायण के सचित्र संस्करण बने हैं जो भारतीय चित्रकला का अमूल्य भंडार हैं।

रामकाव्य और प्रवासी भारतीय समुदाय

रामकाव्य की शक्ति का सबसे प्रभावशाली प्रमाण यह है कि यह भारत की सीमाओं से परे, विश्व के हर उस स्थान पर जीवित है जहाँ भारतीय मूल के लोग बसे हैं। मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, इन सभी देशों में 19वीं शताब्दी में गए गिरमिटिया मजदूर अपने साथ रामचरितमानस का गुटका लेकर गए। वह गुटका ही उनका सबसे बड़ा सांस्कृतिक आधार बना। विजय मिश्रा ने प्रवासी साहित्य के संदर्भ में राम-कथा की भूमिका को इस प्रकार व्यक्त किया है- The Ramayana was not just a religious text for the indentured laborers, it was a cultural constitution. It gave them a language, a set of values, a community and above all, an identity. In the absence of a homeland, it became their homeland. - Vijay Mishra, The Literature of the Indian Diaspora (2007) फीजी के प्रख्यात लेखक प्रोफेसर सुब्रमणि ने अपने निबंध में लिखा है कि फीजी में उनकी साहित्यिक चेतना का उद्गम रामचरितमानस से हुआ। रामायण-मंडलियों में बचपन में किया गया वाचन उनके लेखकीय व्यक्तित्व का आधार बना।

समकालीन संदर्भ में रामकाव्य की प्रासंगिकता

21वीं शताब्दी में जब भारत वैश्वीकरण, तकनीकी क्रांति और सांस्कृतिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है, रामकाव्य की प्रासंगिकता कम नहीं हुई, बल्कि वह नए रूपों में प्रकट हो रही है। टेलीविज़न पर रामायण के धारावाहिक, यूट्यूब पर राम-कथा के प्रवचन, डिजिटल रामायण-पाठ, ये सब इस परंपरा के नए माध्यम हैं। 1987 में दूरदर्शन पर प्रसारित रामानंद सागर कृत 'रामायण' धारावाहिक ने एक अभूतपूर्व सांस्कृतिक घटना को जन्म दिया। उस समय देश का दैनिक जीवन उस घंटे के लिए रुक जाता था। यह रामकाव्य की उस जीवंत शक्ति का प्रमाण है जो हर माध्यम को अपना बना लेती है।

साहित्य में भी रामकाव्य की परंपरा समकालीन लेखकों को प्रेरित करती रही है। विश्वनाथ सत्यनारायण की तेलुगु 'रामायण कल्पवृक्षमु', के.एम. मुंशी की 'कृष्णावतार' शृंखला, और अनेक आधुनिक रचनाकार सभी राम-कथा से अपनी सृजनात्मक ऊर्जा लेते रहे हैं। पर्यावरण के संदर्भ में भी रामकाव्य प्रासंगिक है। राम का वन-प्रेम, वन्य जीवों से मित्रता, नदियों के प्रति श्रद्धा; ये सब भारतीय पारिस्थितिकीय चेतना की अभिव्यक्ति हैं। 'चराचर', चर और अचर सभी प्राणियों के प्रति करुणा की भावना रामकाव्य का एक मूल सांस्कृतिक मूल्य है।

निष्कर्ष- प्रस्तुत शोध-पत्र यह स्थापित करता है कि रामकाव्य और भारतीय संस्कृति का संबंध अन्योन्याश्रित और गहरा है। रामकाव्य ने भारतीय संस्कृति को भाषा दी, मूल्य दिए, आदर्श दिए और पहचान दी। दूसरी ओर भारतीय संस्कृति ने रामकाव्य को हर युग में नया जीवन दिया, नए माध्यमों में, नई भाषाओं में, नए रूपों में। वाल्मीकि से तुलसीदास तक, कबीर से निराला तक, संस्कृत से भोजपुरी तक, मंदिर से रंगमंच तक, राम की कथा इस देश की आत्मा में इस प्रकार समाई है कि भारत को समझना और राम को समझना एक ही यात्रा के दो पड़ाव हैं।

तुलसीदास की यह पंक्ति इस संबंध को सर्वोत्तम ढंग से व्यक्त करती है -

"रामहि केवल प्रेम पिआरा। जानि लेउ जो जाननिहारा।।" -रामचरितमानस, अरण्यकांड, दोहा 35

राम को केवल प्रेम प्रिय है, जाति नहीं, धन नहीं, विद्वत्ता नहीं। यह पंक्ति भारतीय संस्कृति के उस केंद्रीय मूल्य को व्यक्त करती है जो सभी भेदों के परे जाकर मनुष्य-मनुष्य को एक सूत्र में पिरोती है। यही रामकाव्य की सबसे बड़ी सांस्कृतिक देन है।

पादटिप्पणी

संदर्भ-सूची

1. वाल्मीकि. रामायण. सं. आचार्य रामचंद्र वर्मा. गीता प्रेस, गोरखपुर, 1958.
2. तुलसीदास. रामचरितमानस. सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र. ज्ञानमंडल, काशी, 1949.
3. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. परिमल. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1930.
4. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. हिंदी साहित्य की भूमिका. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1940.
5. शुक्ल, रामचंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1929.
6. शर्मा, रामविलास. भारत की भाषिक संस्कृति. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978.
7. Mishra, Vijay. The Literature of the Indian Diaspora: Theorizing the Diasporic Imaginary. Routledge, London, 2007.
8. Ramanujan, A.K. 'Three Hundred Ramayanas: Five Examples and Three Thoughts on Translation.' In: Many Ramayanas. Ed. Paula Richman. University of California Press, 1991.
9. Richman, Paula (Ed.). Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia. University of California Press, 1991.
10. Vatsyayan, Kapila. Classical Indian Dance in Literature and the Arts. Sangeet Natak Akademi, New Delhi, 1968.
11. गांधी, महात्मा. हरिजन. 1934. (Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol. 57, Publications Division, New Delhi)
12. Lutgendorf, Philip. The Life of a Text: Performing the Ramcharitmanas of Tulsidas. University of California Press, 1991.
13. Brockington, John. The Sanskrit Epics. Brill, Leiden, 1998.
14. Pollock, Sheldon. 'Ramayana and Political Imagination in India.' Journal of Asian Studies, Vol. 52, No. 2, 1993.
15. केंद्रीय हिंदी संस्थान. रामकाव्य : परंपरा और प्रयोग. आगरा, 1998